नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत के लिए नई चुनौती

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच-1बी वीज़ा पर एकमुश्त शुल्क 100,000 डॉलर तय कर आईटी सेक्टर और प्रवासी भारतीयों के बीच हड़कंप मचा दिया है. अचानक लिए गए इस फैसले ने भारतीय पेशेवरों को न सिर्फ असमंजस में डाला है, बल्कि भारत-अमेरिका संबंधों पर भी नया संकट खड़ा कर दिया है. भारत लंबे समय से एच-1बी वीज़ा का सबसे बड़ा लाभार्थी रहा है. अमेज़न, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल जैसी अमेरिकी कंपनियों के अलावा टीसीएस, इन्फोसिस और विप्रो जैसी भारतीय कंपनियां अमेरिका के नवाचार और रोजगार का इंजन हैं. जून 2025 तक अमेज़न के 10,000 से ज्यादा कर्मचारी एच-1बी वीज़ा पर थे, जबकि टीसीएस और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियां भी शीर्ष लाभार्थियों में शामिल हैं. सवाल उठता है कि जिन पेशेवरों ने दशकों से अमेरिका को तकनीकी महाशक्ति बनाए रखा, उन्हीं पर इतना भारी आर्थिक बोझ क्यों डाला जा रहा है ?

ट्रंप प्रशासन का तर्क है कि इस कदम से अमेरिकी नौजवानों के लिए अवसर बढ़ेंगे. मगर हकीकत यह है कि भारतीय पेशेवरों ने सिलिकॉन वैली से लेकर वॉल स्ट्रीट तक अमेरिकी कंपनियों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को वैश्विक स्तर पर मजबूत किया है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्लाउड कंप्यूटिंग और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भारतीय प्रतिभा के बिना अमेरिका की प्रगति की कल्पना अधूरी है. शुल्क वृद्धि से कंपनियां प्रतिभा को भर्ती करने से हिचकेंगी और इसका सीधा असर अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा.

हालांकि व्हाइट हाउस ने बाद में सफाई दी कि यह शुल्क वार्षिक नहीं बल्कि केवल नए आवेदनों पर लागू होगा, फिर भी भ्रम और घबराहट ने हालात बिगाड़ दिए हैं. कई भारतीयों ने दिवाली और शादियों के लिए अपनी भारत यात्राएं रद्द कर दीं. कई लोग अमेरिका लौटने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं. नैस्कॉम को सदस्य कंपनियों से अपील करनी पड़ी कि वे अपने कर्मचारियों को अमेरिका वापस बुला लें. यह स्थिति दर्शाती है कि फैसला कितनी जल्दबाज़ी में और बिना उद्योग से परामर्श के लिया गया. भारत के लिए यह मसला सिर्फ आईटी सेक्टर का नहीं है, बल्कि कूटनीतिक चुनौती है. अमेरिका भारत का सबसे बड़ा रणनीतिक और व्यापारिक साझेदार है. रक्षा, इंडो-पैसिफिक सुरक्षा और ऊर्जा सहयोग में दोनों देश लगातार आगे बढ़े हैं. प्रधानमंत्री मोदी और ट्रंप प्रशासन ने कई बार 'ग्लोबल पार्टनरशिप' का दावा किया है. लेकिन एच-1बी विवाद उस दावे पर सवाल खड़े करता है.

भारत को चाहिए कि वह इस मुद्दे को प्रवासी भारतीयों की समस्या तक सीमित न रखे. यह दो अर्थव्यवस्थाओं के बीच विश्वास और साझेदारी की असली परीक्षा है. यदि अमेरिका भारतीय प्रतिभा पर भरोसा नहीं करेगा तो उसका नुकसान केवल भारत का नहीं बल्कि खुद अमेरिका का भी होगा. स्पष्ट है, यह समय भारत के लिए कूटनीतिक आक्रामकता दिखाने का है. दिल्ली को वाशिंगटन को यह संदेश देना होगा कि एच-1बी वीज़ा कोई आप्रवासन सुविधा नहीं, बल्कि दोनों देशों की साझेदारी की धड़कन है. इसे कमजोर करना अमेरिका की तकनीकी बढ़त और भारत-अमेरिका संबंध दोनों को नुकसान पहुंचाएगा. सनद रहे भारत के वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल सोमवार 22 सितंबर को टैरिफ पर चर्चा करने के लिए अमेरिका जा रहे हैं.

उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत इस दौरान ट्रंप के नए फैसले के बारे में अपनी चिंताओं से अवगत कराएगा. कुल मिलाकर स्थिति चुनौती पूर्ण है. हालांकि कुछ आर्थिक विशेषज्ञ मानते हैं कि यह भारत के लिए अच्छा अवसर है, जब वह अपनी प्रतिभा पलायन को रोक कर भारत में ही उन्हें अच्छे अवसर उपलब्ध करा सकता है. इसके अलावा आर्थिक विशेषज्ञ मानते हैं कि ट्रंप के फैसले से जितना भारत को नुकसान है उतना ही नुकसान अमेरिका को भी है. उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दिनों में दोनों देश अपनी समस्याओं को आपसी बातचीत से हल कर लेंगे.

महाकौशल की डायरी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के फरमान से उड़ी दागी नेताओं की नींद...

अविनाश दीक्षित

पहले संगठन के भीतर परिवारवाद की राजनीति को खत्म करने का फरमान और अब नगरीय निकायों व पंचायतों में भ्रष्टाचार में लिप्त नेताओं, अध्यक्षों को हटाने का फरमान... क्या वाकई में अब भ्रष्टाचारी नेताओं और संगठन में परिवारवाद की दम पर आगे आने वाले नेताओं पर शिकंजा कस जाएगा ये तो आने वाला वक्त ही बताएगा लेकिन भारतीय जनता पार्टी के नए प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के फरमान ने उन नेताओं की नींद जरूर उड़ा दी है जिनके दामन में कहीं न कहीं दाग लगा हुआ है और वे सिर्फ इसलिए ही अभी तक बचते आ रहे थे क्योंकि वे संगठन से जुड़े हुए थे. भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के हाल ही में दिए गए बयान कि भाजपा सरकार अब भ्रष्टों को बिल्कुल सहन नहीं करेगी, उनके इस बयान ने राजनैतिक गलियारों में माहौल सरगर्म कर दिया है.

मकसद साफ है कि आगामी चुनावों को लेकर भाजपा बिल्कुल नए अंदाज में पैर जमाना चाह रही है जिससे विपक्ष को कुछ भी बोलने का मौका न मिले. खबर है कि प्रदेश अध्यक्ष द्वारा सभी जिलों के भाजपा नगर अध्यक्षों को ऐसे संदिग्ध नेताओं की गोपनीय तरीके से सूची बनाने भी आदेशित किया गया है. प्रदेश अध्यक्ष हेमंत के नए फरमानों के फैसले को तो लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह ने स्वीकार कर लिया और कह दिया कि भाजपा एक ऐसा दल है जहां फैसलों के साथ ही सहमति हो जाती है. लेकिन जबलपुर के भाजपा के गलियारों में प्रदेश अध्यक्ष के फैसले को लेकर जो चर्चाएं हैं वो कुछ और कहानी बयां करती नजर आ रहीं हैं.

चर्चाएं हैं कि भाजपा प्रदेश में काफी लंबे अर्से से परचम लहरा रही है जिसमें परिवारवाद की राजनीति भी अहम भूमिका रही है, कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ परिवारवादी समीकरण के चलते भगवादल को सफलता मिली है, ऐसे में इस तरह की राजनीति को खत्म करने का फरमान से आगामी चुनावों के समय भाजपा को नुकसान पहुंचने की आशंका भी बलवती हो रही है !

क्या ऐसे नेताओं पर भी कसेगा शिकंजा?

ऐसे में अब ये सवाल भी खड़े होने लगे हैं कि क्या भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा आने वाले दिनों में जबलपुर के उन दागदार नेताओं पर भी शिकंजा कसेगा और उन्हें पार्टी से हटाया जाएगा जो कि गंभीर आपराधिक मामलों में लिप्त हैं. पिछले कुछ महीनों की बात की जाए तो जबलपुर में अलग-अलग जगहों पर देह व्यापार के संचालन से लेकर गोलीकांड जैसी आपराधिक घटनाओं में भाजपा के कई नेताओं का नाम सामने आ चुका है.

चूहों की धमक, सहमे अफसर....

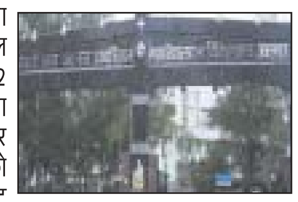

इंदौर में चूहों की करामात ने जो गुल खिलाया उसकी गूंज प्रदेश सहित समुचे देश में गूंजी. कमोवेश कुछ ऐसे ही हालात महाकौशल के सबसे बड़े मेडिकल अस्पताल में सामने आए. यहां 3 मरीज व 2 अस्पताल के कर्मचारी भी चूहों के शिकार बन गए. चूहों ने जो किया वो तो सबके सामने आ गया लेकिन मजे की बात ये है कि चूहों पर नियंत्रण रखने के लिए खर्च हो रही राशि का सवाल अब अफसरों को डराने लगा है. अंचल में चर्चा है कि लाखों रुपए की राशि का बंदरबांट पेस्ट कंट्रोल कंपनी और मेडिकल प्रबंधन के अफसरों के बीच हो रहा है. शुरूआती कुछ दिनों में तो संभाग के सबसे बड़े मेडिकल कॉलेज अस्पताल में चूहों के आतंक की खबर को अस्पताल प्रबंधन ने स्वयं हल्के में लिया और मेडिकल अधीक्षक ने बातों-बातों पर मजाकिया तौर पर कह दिया कि चूहे तो मेरे यहां भी निकलते हैं अब ऐसे में चूहों को कहां तक रोकें. ऐसे में ये जवाब एक जिम्मेदार पद पर बैठने के बाद ऐसा जवाब कहां तक उचित है. अलबत्ता यह बात कलेक्टर के संज्ञान में आते ही मेडिकल अधीक्षक को स्पष्ट निर्देश दोषियों पर कार्रवाई के लिए दिए गए. आनन-फानन में अधीक्षक द्वारा मेडिकल अस्पताल में सफाई व्यवस्था संभाल रही एचएलएल इंफ्राटेक सर्विसेस लिमिटेड पर 50 हजार रुपए का अर्थदंड अधिरोपित किया गया और साथ ही कंपनी के सुपरवाइजर, कर्मचारियों पर कार्रवाई के लिए पत्र लिखा गया. मामले में मानव अधिकार आयोग ने भी संज्ञान लिया और डीन से कार्रवाई करने का प्रतिवेदन तलब किया. फिलहाल कार्रवाई के कागजी घोड़े दौड़ रहे हैं लेकिन हश्र क्या होगा यह देखना दिलचस्प रहेगा.

नरेंद्र मोदी एक राजनीतिक जननायक

शिवराज सिंह चौहान
केंदीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री

भारतीय राजनीति में नरेंद्र मोदी के उदय को विशेषाधिकार के पारंपरिक लेंस से नहीं समझा जा सकता. राजनीतिक वंशों में पले-बढ़े अनेक नेताओं के विपरीत, मोदी और उनकी नेतृत्व शैली ज़मीन से उभरी है, जिसने उनके संघर्ष, वर्षों से ज़मीनी स्तर पर किए गए कार्यों और सरकार के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त व्यवहारिक अनुभवों से आकार लिया है. उनका करियर मात्र एक व्यक्ति के उत्थान को ही प्रदर्शित नहीं करता, बल्कि यह भारत में अभिजात वर्ग द्वारा संचालित राजनीति की नींव के लिए एक चुनौती भी है.

वडनगर के एक साधारण परिवार में जन्मे मोदी का बचपन ज़िम्मेदारी और सादगी से भरपूर रहा. बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए चैरिटी स्टॉल लगाने से लेकर स्कूली छात्र के रूप में जातिगत भेदभाव पर आधारित नाटक लिखने तक, उन्होंने अल्पायु में ही संगठनात्मक कौशल और सामाजिक सरोकार का अद्भुत मिश्रण प्रदर्शित किया. उन्होंने वंचित सहपाठियों के लिए पुरानी किताबें और वर्दियाँ इकट्ठा करने के अभियान भी चलाए, जो इस बात का प्रारंभिक संकेत था कि वह नेतृत्व को किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं, बल्कि सेवा के रूप में देखते हैं. इन छोटे-छोटे प्रयासों ने उनके द्वारा सार्वजनिक जीवन में अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण का पूर्वाभास करा दिया.

उनकी मूलभूत प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) में और भी प्रखर हुईं, जहाँ साधारण कार्यकर्ताओं को ग्रामीणों से घुलने-मिलने, उनके जैसा जीवन व्यतीत करने और अपने आचरण के जरिए उनका विश्वास अर्जित करने का प्रशिक्षण दिया जाता था. एक युवा प्रचारक के तौर पर मोदी ने बिल्कुल वैसा ही किया. अक्सर बस या स्कूटर से गुजरात भर में यात्रा करते हुए, और भोजन व आश्रय के लिए ग्रामीणों पर निर्भर रहते हुए, उन्होंने साझा कठिनाइयों और संघर्षों के माध्यम से सभी वर्गों का विश्वास अर्जित किया. इस अनुशासन ने उन्हें उन लोगों के रोज़मर्रा के सरोकारों से जुड़े रहने में मदद की, जिनकी वे सेवा करना चाहते थे, और इसी ने उन्हें संकटकाल में संगठित, बड़े पैमाने पर कदम उठाने की आवश्यकता पड़ने पर प्रभावी ढंग से नेतृत्व करने के लिए भी तैयार किया.

ऐसा ही एक संकट 1979 में मच्छू बांध के टूटने से आया था, जिसमें हज़ारों लोग मारे गए थे. 29 वर्षीय मोदी ने तुरंत स्वयंसेवकों को पालियों में संगठित किया, राहत सामग्री का प्रबंध किया, शवों को निकाला और परिवारों को सांत्वना दी. कुछ साल बाद, गुजरात में सूखे के दौरान, उन्होंने सुखड़ी अभियान का नेतृत्व किया, जो पूरे राज्य में फैल गया और लगभग 25 करोड़ रुपये मूल्य का भोजन वितरित किया गया. दोनों ही आपदाओं में, उन्होंने बिल्कुल आरंभ से ही बड़े पैमाने पर राहत प्रयास शुरू किए, जिससे उनके उद्देश्य की स्पष्टता, उनके सैन्य-शैली के संगठन और उनका इस आग्रह का परिचय मिला कि नेतृत्व का अर्थ केवल प्रतीकात्मकता नहीं, बल्कि सेवा है.

इन शुरुआती घटनाओं ने जहाँ एक ओर लोगों को संगठित करने की उनकी क्षमता को परखा, वहीं आपातकाल ने दमन के दौर में उनके साहस की परीक्षा ली. मात्र 25 वर्ष की आयु में, एक सिख के वेश में, उन्होंने पुलिस निगरानी से बचने की कोशिश कर रहे कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच संवाद कायम रखा. इस ज़मीनी नेटवर्क ने क्रूर शासन के विरुद्ध प्रतिरोध को जीवित रखा, जिससे उन्हें एक कुशल संगठनकर्ता के रूप में ख्याति मिली.

इन्हीं कौशलों का उपयोग जल्द ही चुनावी राजनीति में भी किया गया. भाजपा - गुजरात के संगठन मंत्री के रूप में, उन्होंने पार्टी का विस्तार नए समुदायों तक किया, जिनमें राजनीतिक विमर्श में हाशिए पर पड़े लोग भी शामिल थे. उन्होंने विविध पृष्ठभूमियों के नेताओं को तैयार किया, ज़मीनी स्तर पर समर्थन जुटाया और पूरे गुजरात में लालकृष्ण आडवाणी की सोमनाथ-अयोध्या रथ यात्रा जैसे बड़े आयोजनों की योजना बनाने में मदद की. बाद में, विभिन्न राज्यों के प्रभारी के रूप में उन्होंने बूथ स्तर तक मज़बूत पार्टी तंत्रों का निर्माण किया.साल 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री के पद पर आसीन होने पर उन्होंने ये सबक शासन में लागू किए. उदाहरण के लिए, पदभार ग्रहण करने के चंद घंटे बाद ही उन्होंने साबरमती में नर्मदा का जल लाने के विषय में एक बैठक बुलाकर इस बात का संकेत दिया कि निर्णायक कार्रवाई उनके प्रशासन को परिभाषित करेगी. उनका दृष्टिकोण शासन को एक जन आंदोलन बनाना था, जहाँ प्रवेशोत्सव ने स्कूलों में नामांकन को प्रोत्साहित किया, कन्या केलवणी ने बालिकाओं की शिक्षा का समर्थन किया, गरीब कल्याण मेलों ने कल्याण को नागरिकों तक पहुँचाया, और कृषि रथ ने कृषि सहायता को किसानों के खेतों तक पहुँचाया.

जीएसटी 2 .0 नई कर नीति और अर्थव्यवस्था को नई धार

गणेश सिंह
सांसद सतना

भारत की कर प्रणाली की यात्रा हमेशा सरलीकरण और दक्षता, विकास और समानता के बीच संतुलन खोजने की रही है। एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का विचार सबसे पहले 1985 में वित्त मंत्री वी. पी. सिंह द्वारा रखा गया था। अगले ही वर्ष संशोधित मूल्य वर्धित कर शुरू किया गया, लेकिन यह अधूरा प्रयोग ही साबित हुआ। 1991 के भुगतान संकट ने इस बहस को फिर जगा दिया, जब भारत के आईएमएफ और विश्व बैंक के साथ हए समझौतों ने व्यापक वैट की ओर धकेला। फिर भी प्रगति धीमी रही। अंतत- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2017 में %वन नेशन, वन टैक्स' की दृष्टि के साथ जीएसटी सचमुच लागू हुआ, जिसने भारत की अप्रत्यक्ष कर संरचना को एकीकृत किया और खंडित बाजार को जो?ा। यह पहला ब?ा कदम था। आठ साल बाद, जीएसटी 2 .0 अगला कदम है दरों से छे?छा? नहीं, बल्कि संरचनात्मक पुनर्गठन, जिसका उद्देश्य है घरेलू चिंताओं को कम करना, छोटे व्यवसायों को सहारा देना और एक युवा, उपभोग-प्रधान अर्थव्यवस्था की आकांक्षाओं के अनुरूप होना। जीएसटी 2 .0 का सबसे उल्लेखनीय पहलू इसका जन-केंद्रित दृष्टिकोण है। भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा पर ब?ते खर्चों से जूझ रहे परिवारों के लिए मक्खन, नमकीन, शिशु उत्पादों और टॉयलेट्रीज जैसी आवश्यक वस्तुओं पर जीएसटी को घटाकर सिर्फ 5 प्रतिशत करना केवल एक लेखा निर्णय नहीं है। यह परिवारों पर प? रहे दैनिक दबावों की स्वीकृति है और वित्तीय सहानुभूति का संकेत है। इससे भी अधिक ऐतिहासिक कदम है स्वास्थ्य और जीवन बीमा को शून्य-रेटिंग देना। वर्षों तक वित्तीय सुरक्षा को टाला जाता रहा जब तक कोई संकट न आ जाए अब, लाखों परिवारों को बिना अतिरिक्त कर के खुद को सुरक्षित करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। इसके साथ ही, जीवन-रक्षक दवाइयों और मेडिकल उपकरणों-जैसे उन्नत कैंसर उपचार और डायग्नोस्टिक रिएजेंट्स को कर-मुक्त कर दिया गया है। संदेश स्पष्ट है- जनस्वास्थ्य कोई परिधीय चिंता नहीं बल्कि राजकोषीय नीति की मूल प्राथमिकता है। ज्यादातर मामलों में, जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर सिर्फ 5फीसदी कर दिया गया है, जिससे आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं कहीं अधिक सुलभ होंगी।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

खर्च करो होकर फीयरलेस क्योंकि अब जमाना है कैशलेस

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, जबसे कैशलेस ट्रांजेक्शन शुरू हुआ है, हमारे पैसे यादा खर्च होने लगे हैं. डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, ई-वालेट, मोबाइल एप से पेमेंट करने की आदत पड़ गई है. मकान का किराया भी हम क्रेडिट कार्ड से देते आए हैं. ऐसे में हमारी हालत घाटे की अर्थव्यवस्था जैसी हो गई है. ऑनलाइन शापिंग करते हैं सेंट-परसेंट, जेब पर भारी पड़ गया कैशलेस पेमेंट ! जमकर करते हैं खरीदारी, भूल गए बचत की जिम्मेदारी !

हमने कहा, कैशलेस हो जाने से खुद को होपलेस मत समझिए. नई पीढ़ी बेफिक्री से खर्च करती है तो आप भी वैसा ही उत्साह दिखा रहे हैं. दौलत खर्च करने के लिए रहती है. नाव में पानी भरने पर दोनों हाथों से उलीचना चाहिए नहीं तो नाव डूब जाएगी. जरूरत से यादा धन की बाढ़ आने पर उसे खटाखट खर्च कर डालना उचित है. शास्त्रों में कहा गया है कि धन की 3 अवस्थाएं होती हैं. या तो वह कंजूस का धन होकर बगैर इस्तेमाल किए तिजोरी में पड़ा रहता है या उसे चोर चुराकर ले जाते हैं. तीसरी अवस्था है उसे दान में दे डालो. दैत्यराज बलि और दानवीर कर्ण ने ऐसा ही किया था. कैशलेस ट्रांजेक्शन ने करेंसी को हाथ लगाए बगैर उसे खर्च करने का अवसर प्रदान किया है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, समाज में प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए धन पास में रहना जरूरी है. नोटों पर गांधी दर्शन के साथ लक्ष्मीवंदन करते रहना चाहिए. धन कमाना पुरुषार्थ का प्रतीक है लेकिन कैशलेस ट्रांजेक्शन के चक्कर में फिजूलखर्ची होती है. व्यक्ति जरूरत से यादा शापिंग करता है. जब नकदी का चलन था तो लोग सोच समझकर खर्च करता था. हमने कहा, पुरानी बात भूल जाइए. आजकल सब कुछ सुविधाजनक हो गया है. बिजली-पानी के बिल या हाउस टैक्स भरने के लिए लंबी लाइन में खड़े रहने की जरूरत नहीं ! घर या दफ्तर से स्कैन कर ऑनलाइन पेमेंट कर दीजिए. भूख लगी है तो जोमैटो, स्विगी से चंद मिनटों में मनचाहा खाना मंगा लीजिए. सब्जी से लेकर किराना तक ऑनलाइन खरीदिए. ई-बैंकिंग की आदत डालिए तो बैंक जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. जीवन बेहद सरल हो जाएगा.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, लोकतंत्र को आसान बनाने के लिए ऑनलाइन वोटिंग चालू होनी चाहिए. मनपसंद उम्मीदवार का क्यूआर कोड स्कॅन कर ओटीपी नंबर डाल कर घर बैठे मतदान हो सकता है. इससे चुनाव खर्च बचेगा. नेता भी बड़ी रैली करने की बजाय ऑनलाइन प्रचार करें और मतदाताओं को ऑनलाइन मुफ्त उपहार भेज दिया करें.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12028

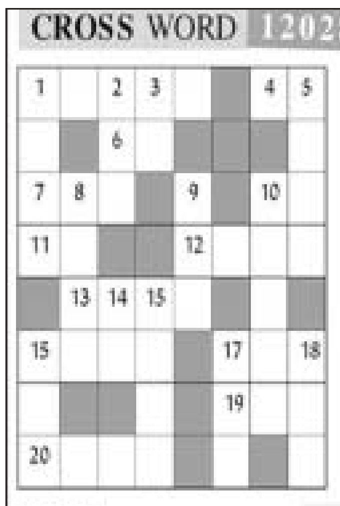

ऊपर से नीचे
1. मेघमाला, बादलों की पंक्ति (सं.) 2. अंजन 3. कोप, क्रोध 5. महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत 8. फूलों का गुछा 9. गीदड़ 10. मन में किसी धारणा-कल्पना अथवा विचार का उदय होना या स्थिर होना 14. आवाज, ध्वनि, गुंजार 15. लगातार, दन-दन शब्द सहित 16. बौद्धिक बल, असाधारण मानसिक शक्ति 17. अनुचित रीति रिवाज या परंपरा 18. नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करने वाला

बाएं से दाएं
1. किसी विशिष्ट कार्य आदि के लिए बनी हुई समिति 4. बुद्धि, ज्ञान, एकाग्रता, सरस्वती (सं.) 6. यश, जैसा 7. एक प्रकार की तुरही जो सेना एकत्रित करने के लिए बजाई जाती है 10. घोड़ा 17. सौ खरब की एक संख्या, आसमान के रंग का 12. खानाबदोश, संन्यासी 13. द्वार-द्वार 16. किसी विषय या कथा के आरंभ करने से पूर्व का वक्तव्य, भूमिका 17. ढेर लगना या लगाना, उलझा दिया जाना 19. हाथ जोड़कर किया जाने वाला अभिवादन 20. अछे भाग्य वाला, सौभाग्यशाली

Solution 12027

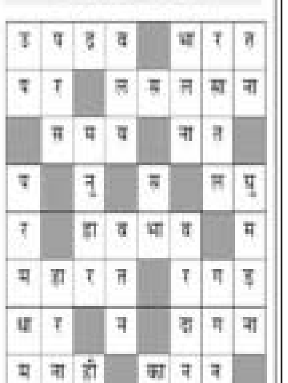

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनिश्चय की राजनीति का सामना करना होगा, व्यापार में विशेष परिश्रम करना होगा, स्वास्थ्य गड़गड़ रहेगा, चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष प्रयत्न करने से कार्यबनेगा, वर्ष के मध्य में यात्रा होगी, कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में अधिकारियों से मेलजोल रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को विशेष चिकित्सा के क्षेत्र मेंसफ्लता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनेतिक अस्थिरता का सामना करना होगा, सिंह राशि के व्यक्तियोंको अचानक धन लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सुखद यात्रा होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्थितियों से संयम सतर्कता रखना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक गंभीर, उदार, एवं दृढ़ निश्चयी स्वाभाव का होगा. इनकी स्मरण शक्ति अच्छी होती है, भाग्यशाली आकर्षक व्यक्तित्व का रहेगा. दूसरों को अपनी ओर प्रभावित करने की इनमें क्षमता रहेगी. माता पिता का सदैव आदर करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

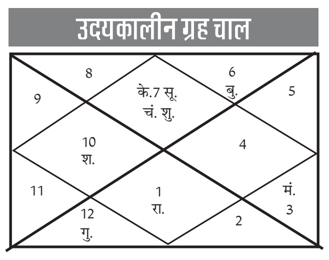

पंचांग

रा.मि. 31 संवत् 2082 आश्विन शुक्ल प्रतिपदा चन्द्रवासरे रात 1/19, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे दिन 11/25 शुक्ल योगे रात 8/57, किंस्तुघ्न करणे सू.उ. 5/59 सू.अ. 6/1, चन्द्रचार कन्या, पर्व- शारदीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापना, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

मेष- मांगलिक कार्य में सफ्लता मिलेगी. मान सम्मान में वृद्धि होगी. भाई बहिनों का सुख सहयोग प्राप्त होगा. यश मिलेगा. अतिथि आगमन होगा.

वृषभ- श्रम एवं प्रयास से सफ्लता मिलेगी. सामाजिक कार्यो में यश एवं कीर्ति प्राप्त होगी. मित्रता उपयोगी रहेगी. पदोन्नति होने का योग है.

मिथुन- जमीन जायजाद प्रापर्टी आदि के कार्यो में व्यवधान पैदा होगा. अनावश्यक खर्च से आपका बजट बिगड़ सकता है. मित्रता उपयोगी रहेगी.

कर्क- संतान पक्ष व राजकीय कार्यो में खर्च होगा. अधिकारियों का सहयोग मिलेगा. आपकी जबावदारी बढ़ सकती है. सुख सम्मान रहेगा.

सिंह- आर्थिक कार्यो में अच्छी सफ्लता मिलेगी. संतान पक्ष की चिन्ता रहेगी. भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होने का योग है. मान-सम्मान मिलेगा.

कन्या- आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी. महिला जाति की सलाह लाभकारी रहेगी. नियमितता का ध्यान रखें, आपके लिये यह हितकर होगा.

तुला- कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफ्लता मिलेगी. नवीन कार्यो में लाभ होगा. महत्वाकांक्षी कार्यो को गति मिलेगी. साहस और संयम से कार्य करें.

वृश्चिक- आय कम और व्यय की अधिकता रहेगी. गुप्त शत्रुओं से चिन्ता होगी. अपमान एवं तनाव की स्थिति से बचें. पदोन्नति आदि का योग है.

धनु- जीवनसाथी का सहयोग रहेगा. व्यवसायिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी. भ्रमण मनोरंजन, आमोद प्रमोद के सुख साधन बढ़ेगे. यश प्राप्त होगा.

मकर- दिनचर्या नियमित रहेगी. इच्छानुसार कार्य बनेंगे. प्रिय व्यक्ति की भेंटवार्ता होगी. यश, मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

कुम्भ- परिवारिक समस्या का सरलता से समाधान होगा. खानपान पर नियंत्रण रखें. पूज्य व्यक्ति से भेंटवार्ता होगी. यात्रा होगी. यश प्राप्त होगा.

मीन- मित्र समागम होगा. लाभ प्राप्तहोने का योग है. पारिवारिक विवाद को टालना हितकर रहेगा. कौटुम्बिकजनों से महत्वपूर्ण विचार विमर्श हितकर रहेगा.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, गुड़ खांड़ चीनी, ज्वार, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, घी, के भाव में नरमी रहेगी. वायदा विचार आज वस्तु में भाव टूटें उसमें मंदी होगी. भाग्यांक 2611 है.

SUDOKU 7160

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7159

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7